



Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 12) DECEMBER 2025

OPEN ACCESS

POPULAR ARTICLE

बदलती सर्दी में पशुओं की देखभाल: स्वस्थ पशुधन, सुरक्षित किसान

डॉ. कृतिका वर्मा

सहायक प्राध्यायक, श्रीगंगानगर पशु चिकित्सा महाविद्यालय,

टाटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान), भारत

*Corresponding Author: kritikaverma366@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18096085>

Received: December 17, 2025

Published: December 21, 2025

© All rights are reserved by डॉ. कृतिका वर्मा

प्रस्तावना:

भारत में पशुपालन खेती से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यवसाय है। यह किसानों के लिए दूध, मांस, ऊन, खाद, परिवहन तथा नियमित आय का प्रमुख साधन है। जैसे-जैसे अक्टूबर-नवंबर का महीना आता है, वैसे-वैसे उत्तर भारत के अनेक राज्यों जैसे राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में सर्दी की शुरुआत हो जाती है। बदलती जलवायु के कारण अब सर्दी का मौसम पहले की तुलना में अधिक कठोर और चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।

अचानक तापमान में गिरावट, लंबे समय तक छाया रहने वाला कोहरा, तेज ठंडी हवाएँ और रात में अत्यधिक ठंडे से सभी परिस्थितियाँ पशुओं के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती हैं। मौसम में इस प्रकार के बदलाव से पशुओं में बीमारियों की आशंका बढ़ जाती है। यदि इस समय पशुओं के आवास, खान-पान और देखभाल पर विशेष ध्यान न दिया जाए, तो न केवल उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है बल्कि दूध उत्पादन भी कम हो जाता है। इसलिए सर्दियों के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल करना बहुत आवश्यक है, ताकि पशु स्वस्थ रहें और किसान की आय सुरक्षित बनी रहे। यह भी ध्यान देने योग्य है कि सर्दियों में, सही प्रबंधन होने पर, दुधारू पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता अपने सर्वोच्च स्तर पर रहती है और बाजार में दूध की मांग भी बढ़ जाती है। ऐसे में यदि पशुपालक थोड़ी सावधानी और समझदारी से पशुओं की देखभाल करें, तो यह मौसम लाभकारी भी सिद्ध हो सकता है।

बदलती सर्दी और पशुओं पर उसका प्रभाव

सर्दी का मौसम केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि पशुओं के लिए भी एक बड़ी चुनौती लेकर आता है। जब मौसम में अचानक बदलाव होता है, तापमान तेजी से गिरता है, कोहरा और नमी बढ़ जाती है, तो इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन क्षमता और कार्यक्षमता पर पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन आजीविका का मुख्य आधार है, इसलिए सर्दियों में पशुओं का बीमार होना किसान के लिए आर्थिक नुकसान का कारण बन सकता है।

सर्दियों में अक्सर दिन में धूप रहती है, लेकिन रात होते ही तापमान अचानक बहुत गिर जाता है। यह तापमान का उत्तर-चढ़ाव पशुओं के शरीर को प्रभावित करता है। जब पशु अपने शरीर को मौसम के अनुसार ढाल नहीं पाते, तो उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप सर्दी-जुकाम, खांसी, बुखार, दस्त, भूख न लगना जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन घट जाता है और छोटे, कमजोर तथा नवजात पशु सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

कोहरा, ठंडी हवा और नमी का दुष्प्रभाव

सर्दियों में कई क्षेत्रों में 10–12 घंटे तक लगातार कोहरा बना रहता है। कोहरे के कारण वातावरण में नमी बढ़ जाती है और सूर्य की रोशनी ठीक से नहीं मिल पाती। इससे पशुओं में सांस से संबंधित रोग बढ़ जाते हैं। दुधारू पशुओं में धैर्यता रोग का खतरा बढ़ता है, जबकि नवजात बछड़ों और मेमनों में निमोनिया होने की संभावना अधिक रहती है।

ठंडी हवाएँ और पाला भी सर्दियों में आम समस्या है। जब पशु खुले स्थान पर रहते हैं और ठंडी हवा सीधे उनके शरीर से टकराती है, तो जोड़ों में दर्द, शरीर अकड़ना, खांसी-जुकाम और लंबे समय तक बीमार रहने की समस्या हो सकती है। नमी और गीली जमीन पर रहने से खुर सड़न, त्वचा रोग, फंगल संक्रमण और खुरपक्का-मुंहपक्का जैसे रोग फैलने का खतरा बढ़ जाता है।



पशुशाला प्रबंधन: सर्दी से बचाव की पहली सीढ़ी

सर्दियों में पशुओं की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण आधार उनकी पशुशाला होती है। इस मौसम में बाहर और अंदर के तापमान में काफी अंतर होता है। जहां गाय-भैंस का सामान्य शरीर तापमान लगभग 100–102 डिग्री फारेनहाइट रहता है, वहीं सर्दियों में बाहरी तापमान कई बार शून्य के करीब पहुंच जाता है। यह अंतर पशुओं के लिए कष्टदायक हो सकता है।

पशुशाला हमेशा सूखी, गर्म और तेज हवा से सुरक्षित होनी चाहिए। यदि पशुशाला का निर्माण पूर्व-पश्चिम दिशा में किया जाए तो ठंडी उत्तरी हवाओं का प्रभाव कम होता है। दीवारें पर्याप्त ऊँचाई की हों और छत से पानी टपकने की समस्या न हो।

ठंडी हवा रोकने के लिए खिड़कियों और खुले हिस्सों पर बोरी, टाट, तिरपाल या प्लास्टिक शीट लगाई जा सकती है। हालांकि पशुशाला को पूरी तरह बंद नहीं करना चाहिए, क्योंकि हवा का हल्का प्रवाह जरूरी होता है, जिससे अमोनिया गैस बाहर निकल सके।

बिछावन और फर्श का प्रबंधन

सर्दियों में फर्श की ठंड सीधे पशुओं के शरीर में प्रवेश करती है। इसलिए फर्श पर सूखी पराली, भूसा या लकड़ी की भुस्सी बिछाना बहुत जरूरी है। बिछावन को समय-समय पर बदलते रहें, क्योंकि गीली बिछावन रोगों को बढ़ावा देती है।



सर्दियों में पोषण प्रबंधन

ठंड के मौसम में पशुओं को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, ताकि उनके शरीर की गर्भी बनी रहे। इस समय संतुलित आहार देना अत्यंत आवश्यक है। आहार में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, खनिज, विटामिन और ऊर्जा होनी चाहिए। हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य मिलाएं, ताकि अफारा और अपचन से बचा जा सके।

दुधारू और गर्भित पशुओं को अतिरिक्त दाना देना चाहिए। बिनौला, खल, दलहन चारा और अनाज का संतुलित मिश्रण दूध उत्पादन बढ़ाने में सहायक होता है। पशुओं को नियमित समय पर चारा खिलाएं और गुनगुना, स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाएं।

नवजात पशुओं की विशेष देखभाल

सर्दियों में नवजात बछड़े, मेमने और बकरी के बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं। जन्म के तुरंत बाद उन्हें सूखे कपड़े से पोंछकर सुखाएं, नाभि को आयोडीन से साफ करें और एक घंटे के भीतर कोलेस्ट्रम पिलाएं। उन्हें ठंडी हवा से दूर, गर्म और सूखे स्थान पर रखें।

टीकाकरण, कृमिनाशन और स्वच्छता

सर्दियों में पशुओं की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है, इसलिए टीकाकरण, नियमित कृमिनाशन और स्वच्छता बेहद जरूरी है। एफएमडी, गलवांटू, बीक्यू और पीपीआर जैसे रोगों के टीके समय पर लगावाएं। हर तीन महीने में कृमिनाशन करें और पशुशाला की रोज़ सफाई रखें। इससे रोग फैलने का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है।

निष्कर्ष

बदलती सर्दी केवल मौसम का बदलाव नहीं है, बल्कि यह पशुओं के स्वास्थ्य की एक बड़ी परीक्षा है। यदि पशुशाला सुरक्षित हो, आहार संतुलित मिले, पानी गुनगुना दिया जाए, नवजात पशुओं को पर्याप्त गर्माहट मिले और टीकाकरण-कृमिनाशन समय पर हो, तो सर्दी का मौसम नुकसान की बजाय लाभ का अवसर बन सकता है।

याद रखें- पशुओं की देखभाल कोई अतिरिक्त खर्च नहीं, बल्कि किसान की आय और भविष्य की सुरक्षा है। जो किसान अपने पशुओं का ध्यान

रखता है, वही सर्दी की मार से बच पाता है।